Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
दिनांक - 22 अप्रैल, 2024

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-2 'बहू की विदा' (एकांकी) लेखक - विनोद रस्तोगी

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या सत्रह पर दिए पाठ-2 'बहू की विदा' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम विनोद रस्तोगी जी द्वारा रचित एकांकी 'बहू की विदा' पढ़ेंगे तो आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक एकांकी संचय की पृष्ठ संख्या-17 पर दिए पाठ-2 निकाल लें साथ ही उत्तर-पुस्तिका भी निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के विराम के अंतर्गत लिखेंगे। अतः आप सभी का पाठ को ध्यानपूर्वक सुनना एवं समझना आवश्यक है। आशा करती हूँ कि अब आप अपनी-अपनी पुस्तक खोलकर पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो! 'बहू की विदा' एकांकी एकांकीकार विनोद रस्तोगी द्वारा रचित है। इस एकांकी के माध्यम से उन्होंने समाज में अपनी जड़ें जमा चुकी दहेज प्रथा पर करारा प्रहार किया है। दहेज के लोभी व्यक्ति समाज में अपनी झूठी शान एवं प्रदर्शन के चलते दहेज की अनुचित माँग करते हैं। वे यह

भूल जाते हैं कि हमारी बहू किसी की बेटी है और हमारी बेटी भी किसी की बहू है। आज दहेज के लिए हम अपनी बहू को परेशान कर रहे हैं तो संभव है कि हमारी बेटी के साथ भी वैसा ही हो। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में लिया-दिया गया दहेज अनुचित है। अतः बहू व बेटी में कोई अन्तर न समझते हुए दहेज जैसी कुप्रथा का पूरे ज़ोर से विरोध करने की प्रेरणा देना ही एकांकीकार का उद्देश्य है।

इस एकांकी में मुख्य पाँच पात्र हैं। जीवनलाल, राजेश्वरी, कमला, रमेश एवं प्रमोद। गौरी अन्य पात्र है। तो आइए! अब हम एक-एक करके इन पात्रों के बारे में जानेंगे।

पात्र-परिचय

जीवनलाल - जीवन लाल एक धनी व्यापारी है, जिसकी आयु पचास वर्ष है। वह एक लोभी, दोहरे चरित्र वाला, स्वार्थी, अहंकारी और भावनाशून्य (भावनाओं से रहित) व्यक्ति है। वह संबंधो से अधिक पैसों को महत्त्व देता है। वह बेटी और बहू को एक समान नहीं मानता लेकिन जब कहानी के अंत में उसकी स्वयं की बेटी गौरी के ससुरालवाले भी दहेज कम देने के कारण उसे विदा नहीं करते तो इस घटना से जीवनलाल का हृदय परिवर्तन हो जाता है।

राजेश्वरी - राजेश्वरी जीवनलाल की पत्नी, रमेश और गौरी की माँ एवं कमला की सास हैं। उनकी आयु छियालीस वर्ष है। राजेश्वरी एक सहृदयी, ममतामयी, दयालु एवं भावनाओं से परिपूर्ण हैं। वह दहेज की विरोधी है। इस बात के लिए वह अपने पति जीवनलाल को भी समझाती है। राजेश्वरी बेटी और बहू को एक समान मानती है। कमला की विदाई पाँच हज़ार रुपए के कारण न होने पर वह भावुक हो जाती हैं तथा स्वयं तिजोरी में से पाँच हज़ार रुपए निकालकर प्रमोद से जीवनलाल को देने के लिए कहती है। वह पैसों से अधिक रिश्तों को अधिक महत्त्व देने वाली महिला है।

रमेश - रमेश जीवनलाल का पुत्र और कमला का पति है। रमेश आधुनिक विचारों वाला, माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र है। वह बाईस वर्षीय युवक है। वह स्वयं दहेज विरोधी है, लेकिन पिता के आगे कुछ बोल नहीं पाता। वह अपनी बहन गौरी को विदा कराने उसके ससुराल जाता है लेकिन दहेज की कमी के कारण गौरी की विदाई नहीं हो पाती और वह अकेला लौट आता है।

प्रमोद - प्रमोद कमला का भाई है, जिसकी आयु तेईस वर्ष है। वह विनम्र, स्वाभिमानी, संस्कारी एवं बड़ों का सम्मान करने वाला है। उसके विचारों में स्पष्टता है, वह जीवनलाल से अपनी बात स्पष्ट शब्दों में कहता है। राजेश्वरी द्वारा दिए जाने वाले रुपए स्वीकार न कर वह अपने स्वाभिमान का परिचय देता है। वह अपनी बहन कमला को सांत्वना देता है तथा अगली बार जीवनलाल को चोट के मरहम के साथ आने का वादा करता है।

कमला - कमला, प्रमोद की बहन तथा रमेश की पत्नी है। वह उन्नीस वर्षीय नवविवाहित है। कमला एक आदर्श बहू एवं बेटी है। वह अपने परिवार की खुशियों के लिए अपनी खुशियाँ न्योछावर करने के लिए तत्पर रहती है। जीवनलाल द्वारा विदाई न होने पर भी वह भाई के सामने कमज़ोर नहीं पड़ती और न ही ससुरालवालों को भला-बुरा कहती है। उसे मायके की कमज़ोर आर्थिक स्थिति की भी चिंता है।

गौरी - गौरी इस एकांकी की गौण पात्र है। वह एक सहृदयी, हँसमुख एवं अच्छे स्वभाव की है। इसका प्रमाण कमला के मुख से प्रमोद के सम्मुख गौरी की प्रशंसा सुनने पर मिलता है। कमला उसकी प्रशंसा करते हुए प्रमोद से कहती है कि गौरी एक बहुत अच्छे स्वभाव की, हर समय खुश रहने वाली एवं सभी से शीघ्र ही मिलनसार होनी वाली युवती है।

बच्चो! अब हम एकांकी को विस्तार से समझेंगे। पर्दा उठते ही जीवनलाल खिड़की के पास खड़े दिखाई देते हैं। वे बाहर की ओर देख रहे हैं। उनकी आँखों पर चश्मा है।

भरे चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछे हैं। सिर गंजा है। वे धोती-कुर्ता पहने हुए हैं। उनके मुख पर गंभीरता और समृद्धि (संपन्नता) के चिह्न हैं। उनके सामने कमला का भाई प्रमोद विनम्र भाव से खड़ा है। वह पैंट और बुश्शर्ट पहने है। उसके चेहरे पर निराशाजन्य करुण भाव है। क्योंकि प्रमोद अपनी बहन कमला को पहला सावन मायके में मनाने के लिए विदा कराने उसके ससुराल आया है लेकिन कमला के ससुर जीवनलाल अपनी बहू कमला की विदा न होने से मना कर देते हैं। प्रमोद उनसे कहता है कि हर लड़की का यह सपना होता है कि वह अपना पहला सावन अपने मायके में अपनी सखी-सहेलियों के साथ हँस-खेलकर बिताए। यह जानते हुए भी जीवनलाल प्रमोद को अपना निर्णय सुना चुके थे कि कमला विदा नहीं होगी। प्रमोद, जीवन लाल से कहता है कि यदि मैं कमला के बिना घर गया तो माँ का हृदय टूट जाएगा क्योंकि माँ कमला के आने का इंतज़ार कर रही होगी। जीवनलाल प्रमोद की बात का उत्तर देते हुए कहते हैं कि यदि उसे अपनी बहन विदा करानी थी तो विवाह में दहेज पूरा क्यों नहीं दिया। प्रमोद ने कहा कि अपनी सामर्थ्य (क्षमता) के अनुसार जितना हो सका, उतना दिया। जीवन लाल प्रमोद की यह बात सुनकर उसे प्रताड़ित (कष्ट पहुँचाना) करते हुए कहते हैं कि यदि तुम्हारी सामर्थ्य कम थी तो अपनी बराबरी का घर देखते। तुम्हें मुझ जैसे अमीर (संपन्न) और इज़्ज़तदार आदमी से रिश्ता जोड़ने का सपना नहीं देखना चाहिए था। जीवनलाल ने प्रमोद से कहा कि झोंपड़ी में रहकर महल से नाता क्यों जोड़ा अर्थात् जीवनलाल महल में रहने वाला अमीर आदमी है और प्रमोद अथवा कमला के मायके वाले झोंपड़ी में रहने वाले गरीब लोग हैं। उन्हें सोच-समझकर हमसे रिश्ता जोड़ना चाहिए था।

जीवनलाल का मानना है कि विवाह के समय कमला के घरवालों ने उचित दान दहेज नहीं दिया और बारात की खातिरदारी भी ठीक ढंग से नहीं की गई। इस कारण भरी

बिरादरी में रिश्तेदारों ने हँसी उड़ाई, जिससे उनके मान-सम्मान को चोट पहुँची है अर्थात् उनका बहुत अपमान हुआ है। इसका ज़िम्मेदार वह प्रमोद एवं उसकी माँ को मानते हैं। वैसे तो कमला के मायकेवालों ने अपनी हैसियत के अनुसार जितना बन सका उतना दहेज दिया और बारात की आवभगत भी की परन्तु जीवनलाल इससे खुश नहीं थे। उन्होंने प्रमोद से कहा कि यदि कमला को विदा कराना चाहते हो तो उस घाव के लिए मरहम भेजो।

बच्चो! देखा जाए तो 'मरहम' शब्द का अर्थ होता है घाव को ठीक करने के लिए लगाया जाने वाला लेप। जो घाव के उपचार हेतु लगाया जाता है। परन्तु यहाँ 'मरहम' से तात्पर्य यह नहीं बल्कि जीवनलाल द्वारा दहेज के रूप में माँगे पाँच हज़ार रुपए हैं। जिस प्रकार मरहम शरीर के घाव को ठीक करता है उसी प्रकार जीवनलाल के सम्मान को जो चोट पहुँची है वह चोट पाँच हज़ार रूपए रूपी मरहम से ही ठीक हो सकती है।

प्रमोद ने जीवनलाल से कहा और विश्वास दिलाया कि आप इस समय कमला को विदा कर दें, हम गौने में आपकी हर माँग पूरी करने की कोशिश करेंगे।

प्रमोद की बात सुनकर जीवनलाल ने कहा कि वह प्रमोद की बातों में आने वाले नहीं हैं इसलिए वह उन्हें मूर्ख बनाने की कोशिश न करे। जीवनलाल को लगता है कि प्रमोद उन्हें मूर्ख बना रहा है। इस समय विदा कर बाद में वह अपनी बात से पीछे हट जाएगा। इसलिए वे बिना पूरी रकम मिले कमला की विदाई को तैयार नहीं होते। उन्होंने अपना आखिरी फैसला सुनाते हुए प्रमोद से कहा कि कमला की विदा तभी होगी जब तुम मेरे हाथ में पाँच हज़ार रुपए रख दोगे।

प्रमोद ने जीवनलाल के द्वारा कुछ पैसों की वजह से कमला की विदाई न करने को सरासर अन्याय बताया। 'सरासर अन्याय' का अर्थ है पूरी तरह से न्याय न होना।

जीवनलाल को शिकायत है कि विवाह में बारात की खातिर ठीक से न होने से उनकी शान को ठेस पहुँची, उनके नाम पर जो धब्बा लगा, भरी बिरादरी में उनकी जो हँसी हुई उस करारी चोट का घाव आज भी ताज़ा है। इसलिए प्रमोद उनसे कहता है कि शिकायत आपको हमसे है। उस भोली-भाली लड़की अर्थात् कमला ने आपका क्या बिगाड़ा है, जो उसे विदा न करके आप अपने अपमान का बदला उससे ले रहे हैं। प्रमोद आगे यह भी कहता है कि यदि रमेश बाबू होते तो ऐसा अन्याय न होने देते।

प्रमोद की यह बात जीवनलाल को बुरी लगती है। वे रमेश की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि रमेश मेरा बेटा है। वह समझदार और आज्ञाकारी पुत्र है। वह मेरी बात का कभी विरोध नहीं कर सकता। यदि वह भी यहाँ होता तो मेरे निर्णय को अवश्य स्वीकार करता। पिता का विरोध करने की हिम्मत उसमें नहीं है। वह तुम्हारी तरह बड़ों के मुँह लगने की बदतमीजी कभी नहीं कर सकता।

प्रमोद अपमान समझकर बेचैन हो गया। जीवनलाल की बातें सुनकर प्रमोद ने जीवनलाल को याद दिलाते हुए कहा कि बेटीवाला समझकर ही आप मेरा अपमान कर रहे हैं परन्तु यह भी मत भूलें कि आप भी एक बेटी के पिता हैं।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए विराम देंगे एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. जीवनलाल कमला को मायके क्यों नहीं भेजना चाहते?
प्रश्न 2. प्रमोद कमला को मायके क्यों ले जाना चाहता है?
प्रश्न 3 कमला के मायके न जाने पर माँ का दिल क्यों टूट जाएगा?

बच्चो! प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए दी गई अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने इन प्रश्नों के उत्तर सरलता से लिख लिए होंगे।

अब मैं आपको इन्हीं प्रश्नों के उत्तर बता रही हूँ जो इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. जीवनलाल कमला को मायके इसलिए नहीं भेजना चाहते थे क्योंकि कमला के विवाह में उन्हें इच्छानुसार दहेज नहीं दिया गया था। वह उसे मायके तभी भेजेंगे जब प्रमोद उन्हें पाँच हज़ार रुपए देगा।

उत्तर 2. प्रमोद कमला को मायके इसलिए ले जाना चाहता है क्योंकि कमला के विवाह के बाद उसका यह पहला सावन था। सावन में लड़कियाँ अपने ससुराल से मायके आती हैं और अपनी सखी-सहेलियों से मिलकर खुश होती हैं। लड़की के माता-पिता भी अपनी बेटियों की बेचैनी से प्रतीक्षा करते हैं।

उत्तर 3. कमला के मायके न जाने पर उसकी माँ का दिल टूट जाएगा क्योंकि माँ को अपनी बेटी को ससुराल भेजने के बाद उस समय की प्रतीक्षा रहती है जब उसकी बेटी मायके आती है। विवाह के बाद कमला का यह पहला सावन था इसलिए माँ को पूरा भरोसा था कि कमला के ससुराल वाले कमला को मायके अवश्य भेजेंगे।

बच्चो! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। आशा है कि आज समझाए गए पाठ को आपने रुचि से समझा होगा। एकांकी का शेष भाग आपको अगले सप्ताह समझाया जाएगा। आप इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 19 तक दो-तीन बार अवश्य पढ़ेंगे एवं ध्यानपूर्वक समझने का प्रयास भी करेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ। इस कार्य को आप पाठ की सहायता से अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"अगर तुम्हारी सामर्थ्य कम थी, तो अपनी बराबरी का घर देखते। झोंपड़ी में रहकर महल से नाता क्यों जोड़ा?"

प्रश्न(क) उपर्युक्त कथन किसने, किससे, कब तथा क्यों कहा है?
प्रश्न(ख) श्रोता ने अपने 'सामर्थ्य' के संबंध में क्या कहा?
प्रश्न(ग) 'झोपड़ी' तथा 'महल' से वक्ता का संकेत किस-किस ओर है?
प्रश्न(घ) वक्ता किस बात पर क्रोधित है तथा क्यों?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]